Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-IV ISSUE-III MAR. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

रहीम की भक्ति भावना

- डॉ. लीला कर्वा

रहीम एक विख्यात कवि ही नहीं थे बल्कि शूरवीर योद्धा थे इसे हम जान चुके हैं । योद्धा कहने पर मारने - मरने की हिंसा प्रति-हिंसा जैसी क्रूर भावनाओं का ही किसी में निवास हो यह आवश्यक नहीं । वैसे भी यह बात सच है कि रहीम जैसे परस्पर विरोधी गुणों का मेल वाला व्यक्तित्व तो विरला ही होता है । युद्ध के माहौल में से बाहर निकलने के बाद हमारे महाराष्ट्र में लड़नेवालों की चित्तवृत्तियाँ शृंगार में रमी हैं । लवनियों की जलसों की झड़ी लगा दी है उन्होंने इसीलिए युद्ध और भगवान की भक्ति का मेल हमारी तो समझ से कुछ दूर की वस्तु लगती है । यह दूर होती हुई भी रहीम में आकर नजदीक की वस्तु बनती है । रहीम का अंत:करण भक्ति भावना से ओतप्रोत लगता है । इसके पीछे युद्धकाल में जाने अनजानें में हुआ अन्याय - अत्याचार ही कारणीभूत हो सकता है । जो भी हो, रहीम की भक्ति भावना उनके पदों में जिस तरह व्यक्त हुई है, वह देखने की चीज है । इससे पहले की रहीम की भक्ति भावना को देख लें, भक्ति भावना का तात्विक पक्ष देखना आवश्यक लगता है । अत: हम भक्ति भावना के विभिन्न अर्थों को विद्वानों की सम्मतियों के सहारे समझकर फिर रहीम की भक्ति भावना पर विचार करना होगा ।

1.भक्ति की परिभाषा - स्वरुप *सेवार्थक भज* धातु से कितन प्रत्यय लगाने पर भक्ति शब्द बनता है । अत: इसका व्यत्पत्ति निमित्तिक अर्थ है सेवा । परन्तु यह आरम्भिक व्यत्यत् अर्थ आगे चलकर सप्रेम एवं सादर देव सेवा के अर्थ में सीमित हो गया । डॉक्टर उदयभानुसिंह के अनुसार भक्ति अनुसार *भक्ति शब्द* में भज धातु का समीचीन अर्थ शरण में जाना या भाग लेना है । उनका कहना है कि भक्त भगवान के कार्य को आगे बढ़ाना चाहता है, उसके रस, ज्ञान और कृति में भाग लेना चाहता है । इसीलिए वह भगवान की शरण में जाकर सेवक रुप में अपनी स्थिति बनाए रखना चाहता है और मुक्ति की कामना नहीं करता ।

भक्ति भावना में भक्त अपने भगवान के प्रति समर्पित होता है, उसे अपने ईश्वर के प्रति अन्यन्य प्रेम होता है । उसके लिए प्रभु को छोड़कर अन्यों की उपासना करना वैसा ही है, जैसे वृक्ष के मूल को छोड़कर शाखाओं को सींचना अथवा गंगाजल को छोड़ कर उसके तट पर पानी पीने के लिए कुआँ खोदना ।

2.भक्ति के भेद : भक्ति के दो रुप है - अपनी-अपनी मान्यताओं के अनुसार प्रेयर, नमाज, चन्दन, हवन, प्राणायाम और जप आदि के द्वारा इष्टदेव की उपासना करना भक्ति का बाह्य स्वरुप हैं । प्रभु प्रेम, जीव, दया, मानव कल्याण एवं इष्ट चिंतन में अनुरक्ति भक्ति का आन्तरिक रुप है ।

इसी प्रकार भक्तों के भावना पर आधारित भक्ति के यह भेद होते हैं। भक्त अपने प्रभु को स्वामती, सखा-पुत्र, पति, आदि रुपों में स्मरण करता है। इसीलिए भक्ति के दास्य, सख्य, वात्सल्य एवं शृंगार आदि अनेक रुप हो गए हैं । संत अपने इष्टदेव को साकार रुप में नहीं मानते, वे उसे एक शक्ति के रुप में मानते हैं । जहाँ भक्त का इष्टदेव साकार रुप में होता है उसे सगुण भक्ति कहते हैं, राम, कृष्ण, गंगा मैया, शंकर आदि साकार रुप हैं, अत: इनकी भक्ति करना सगुन भक्ति है । कबीर के समान संत अपने आराध्य को केवल एक शक्ति मानते हैं । यह निर्गुण भक्ति है ।

3. रहीम का भक्ति भाव :

रहीम पर भक्ति के संस्कार - रहीम का जीवनकाल इ.स. 1556-1627 तक रहा । हिन्दी साहित्य के इतिहास में यह काल भक्ति काल के अंतर्गत आता है । इस काल में अकबर की धार्मिक सहिष्णुता और उदारवादी नीति हिन्दु और मुसलमानों के संबंधों के बीच जो गहरी दरार होती जा रही थी उसे नष्ट करने का कार्य कर रहा था । भक्ति युग ने विशाल मानवीय बोध जगाया, इसी कारण रहीम रसखान जैसे कवि व्यापक भाव बोध के साझीदार हुए । भक्ति युग की यह भूमिका थी कि रहीम और रसखान जैसे शासक वर्ग के लोगों में महाभाव की आकांक्षा जगी, भक्ति से प्रेरित होकर बिना हिन्दु हुए,

बिना वैरागी हुए भी उस अनुराग को वे साथ लेते हैं जो विधिवत दीक्षित विरकृत हिन्दु साधुओं के लिए भी आसानी से सुलभ नहीं है ।

माँ का राजपुती खून, दरबार में हिन्दी कवि एवम् पंडित से सम्पर्क था और तुलसी रसखान के साथ निकट के संबंध से रहीम के भक्ति के संस्कार और भी प्रबल होते गये ।

तुलसी रहीम की दानी वृत्ति को जानते थे । वे दानी भी थे और विनम्र ये इसलिए जैसे है, दान देते अपनी आँखे नीचे कर लेते थे । तो तुलसीदासजी ने उनसे पूछा

सीखे कहा नवावजु ऐसी देनी देन
ज्यों ज्यो कर ऊँचे करयो त्यों त्यों निचे नैन ।

रहीम का उत्तर भी बड़ा विनम्र था ।

देनहार कोई और है जग ज्योर्तिमय
लोग भरम हम पर धरे तासुँ निचे नैना

रहीम के भक्ति के प्रमाण है उनकी भक्ति पर रचनाएँ । रहीम की दोहावली में नीति के अलावा भक्ति के दोहें भी हैं, उनकी सभी रचनाओं के प्रारंभ में कुछ पद अपने आराध्य को अर्पित हैं । फुटकर बारवे पद एवं संस्कृत श्लोक में भी उनकी भक्ति भावना प्रबलता से उभरी है ।

दुसरा सबल प्रमाण है किवदंतियाँ कहते हैं रहीम को नाथ जी के दर्शन हुए थे । बलदेव प्रसाद अग्रवाल जी ने इस संदर्भ में *मुस्लिम कवियों का कृष्ण-काव्य*, पुस्तक में एक आधार प्रस्तुत किया है । भक्तमाल नाभाजी ने लिखी थी। उनके शिष्य प्रियादासजी ने उस पर टीका की थी । प्रियादासजी के पुत्र वैष्णवदासजी ने *भक्तमाल प्रसंग* नाम से प्रियादासी टीका पर टीका रची । उसमें लिखा है - एक रहीम नाम पठान विलायति में रहे । ताने सुनी की नाथजी बहुत खुबसुरती है । तब वाने (मन में) कहीं खूबी बिना मिठाई कौन काम की। यह बिचारी फेरि (दर्शन की) चाहिए भाई । रात दिना चल्योई आयो । जब (रहीम) दरवाजे पे आयो तब (चौबदार ने) रोकयो (और कहा) भीतर मत जाय । तब (रहीम) बगदि के (उलटकर) बोल्यों यह साहब (बड़प्पन) अरु यह बेसुरी (बेशहुरी) चाह (दर्शन लालसा) क्यों दई (और जो) चाह दई तो जाया (देह) मेलों क्यो द्यो ? और यह दोहा कहा -

हरि *रहीम* ऐसी करी, ज्यों कमान सर पर ।
खैचि आपनी और को, जरि दियो पुनि दर ।।

तब ऐसे कहिके (रहीम) पर्वत (गोवर्धन) के नीचे जाय बैठे तब गुसाई जीने (यह सब) मुनि के प्रसाद को थार लेके रहीम पे गये । तब वामें (रहीम ने) कही - बाबा तुम यहाँ क्यों आवते हो । तुम सों हमारो का काम है । मैं तो जिसन बुलाया हूँ (जिसने मुझे बुलाया है) जिसे ही कहता हूँ । तब नाथजी (स्वय) थार लाए । (परन्तु) तब वाने (रहीम ने) पीठ फेरि लई । तापें यह दोहा कह्यो -

खेचि चढ़नि, ढीली ढरति, कहहु कोन यह प्रीति ।
आज काल मोहन गही, बस-दिया की रीति ।।

यह विचारके (रहीम ने) पीठ दई । तब (श्रीनाथजी) थारि धरि के चले गए तब यह पछताओ *मैने बुरी करी* । *बाकी (श्रीनाथजी को) तो मौसे बहुत आसिक हैं मौको ऐसो मासूक कहाँ* । फेरि कहा है । तब विचार (किया कि) अब (तो) दिन कटई करे (केवल) बाकी बातन सो ।

रहीम इससे भी नाराज ही थे । इसीलिए वे शिकायत करते हैं कि तेरे तो अगणित मीत हैं फिर तु मुझ गरीब की ओर क्यों ध्यान देने लगा । मैं तेरी प्रीति मैं बावला हो रहा हँ और तुझे वो अच्छा नहीं लगता । रहीम ने कितने सुंदर ढंग से ये भाव प्रकट किये है -

रहिमान, कीन्हि प्रीति, साहब को भावे नहीं ।
जिनके अगनित मीत, हम गरीबन को गने ।।

श्री नाथजी पधारते समय थोड़ी देर के लिए ही क्यों न हो रहीम ने जिस मनमोहिनी छवि देखी उसका अनुपम वर्णन उसने इन दो रचनाओं में किया है ।

पहले पद में मुरली मनोहर पीताम्बरधारी कमलनयन मनमोहन श्रीकृष्ण की मधुमयी छबि का वर्णन किया है । रहीम कमर में पीली धोती पहने, हाथ में मुरली लिए, माथे पर केसर का तिलक लगाये कृष्ण के स्वरुप पर अत्याधिक मुग्ध है । *श्रीकृष्ण के भुवन मोहन रुप की आसक्ति, उनके विशाल नेत्रों का आकर्षण रहीम की आत्मा को कुछ ऐसे झकझोर रहे हैं कि वे व्याकुलता पूर्ण पद पढ़ते ही बनता है* ---

छबि आवत मोहनलाल की ।
काछनि काछे कलित मुरलि कर पीत पिछोरी साल की ।।
बंक तिलक केसर को कीने दुति मानो बिधु बाल की ।
बिसरत नाहिं सखी मी मन ते चितवनि नयन बिसाल की ।।
नीकी हंसनि अधर साधरनि की छबि छीनी सुमन गुलाल की ।
जल सों डारि दियो पुरहून पर डोलनि मुक्ता माल की ।।
आप मील बिन मौलनि डोलनि मदन गोपाल की ।
यह स्वरुप निरखे सोइ जाने इस रहीम के हाल की ।

12 पृ 168

और इससे भी प्यास नहीं बुझती तो कहते हैं - मनमोहन की मधुर मुस्कान उनके हदय से दूर नहीं होती । कृष्ण के विशाल नेत्र कमल के समान विशाल हैं । उनके दाँतों की चमक बिजली की चमक से भी अधिक चमकीली है । रास के समय उनके पीले वस्त्रों का इधर उधर फहराना ये सब ऐसे दृश्य हैं कि जिनसे रहीम का मन अपने वश में नहीं रहता ।

कमल दल नैननि की उनमानि ।
बिसरत नाहिं सखी मो मन ते मंद मंद मुसकानि ।।
यह दसननि दुति चपला हूते महा चपल चमकानि ।
वसुधा की बसकरी मधुरता सुधा-पगी बतरानि ।।
चढ़ी रहे चित उर बिसाल को कुकुतमाल थहरानि ।
नृत्य-समय पीतांबर हू की फहरि फहरि फहरानि ।।
अनुदिन श्री वृन्दावन ब्रज ते आवन आवन जाति ।
अब रहीम चित ते न टरति हे सकल स्याम की बानि ।।

13 पृ108

4. <u>रहीम के भक्ति-भाव की विशेषता</u> -अन्य भक्त कवियों की तरह रहीम ने वैरागी जीवन व्यतित नहीं किया । उन्होंने समाज में रहकर अपने कर्तव्य पालन करते हुए अपने भगवान की आराधना की । भारतीय संस्कृति की नस नस से परिचित होने के कारण किसी एक को अपना ईष्ट नहीं माना अपितु भारतीय भक्ति के आधारस्तम्भ श्रीकृष्ण एवं राम के साथ सीता एवं राधा का वर्णन उनके काव्य में हुआ है । अवतारवाद को पूर्ण रुप से स्वीकार किया है । रहीम को भारतीय पौराणिक कथाओं का पूरा ज्ञान था और उन्होंने उनका आदर भी किया । रामचरितमानस को वो हिन्दुओं का वेद तो मुसलमानों का कुरान मानते हैं ।

रामचरित मानस विमल, सन्तन जीवन प्रान ।
हिन्दुवन को वेद सम, जनमहि प्रकट पुरान ।।

रहीम की भक्ति में तल्लीनता और लगन दिखाई देती है ।।

ते रहीम मन आपुनों कीन्ही चारु चकोर ।
निसि बासर लाग्यो रहै, कृष्णचन्द्र की ओर ।।

रहीम मैं दास्य, सख्य, मधुर, वात्सल्य सभी प्रकार की भक्ति के उदाहरण मिलते हैं । उनके भक्ति के सावन हैं - श्रवण, रुपासक्ति, कीर्तन, पूजासक्ति, नामासक्ति स्मरण, परम विरह, गुण कथन, गुरुकृपा आदि । रहीम की भक्ति इतनी श्रेष्ठ थी कि कहीं कहीं उसमें अद्वैतभाव भी मिलता है । और एकाध दोहें में दार्शनिकता भी दिखाई देती है ।

अद्वैतवाद - जहाँ भक्त और भगवान एकरुप हो जाते हैं ।

जिहि *रहीम* तन मन लियो, कियो हिये बिच मौन ।
ता सो दुखसुख कहन की, रही बात अब कौन ।। 73 पृ 84

कबीर के *जब मैं था तो हरिनाहिं, अब हरि है मैं नाहिं, के ही भाव रहीम के इस दोहे में मिलता है - नीति के साथ* ।

रहिमन गली है सांकरी, दूजों ना ठहराहिं ।
आपु अहै तो हरि नहीं, हरि है तो आपुन नाहिं । 93 पृ 97

इस स्थिति में पहुँचना ऐसा है जिसके बारे में कुछ भी कहा नहीं जाता और जो कहते हैं, वे इस स्थिति को जानते नहीं और जो इसे जानते हैं, वे फिर कहते नहीं, मन मस्त हुआ तो क्यों बोले ।

रहिमन बात अगम्य की, कहन सुनन की नाहि ।
जै जानत ते कहत नहिं, कहत ते जानत नाहिं ।।
226 पृ 100

दास्य भक्ति - दास्य भक्ति में भक्त अपने भगवान को साहब मानता है और पूर्ण रुप से उसकी शरण में जाता है ।

गहि सरनागति राम की, भवसागर की नाव ।
रहिमन जगत उधार कर, और न कछू उपाय ।। 51 पृ 82

शरणागत के अलावा कोई चारा नहीं है । हे राम, इस जगत से उधार करने के लिए मुझे तेरे सहारे की आवश्यकता है । तुमने जैसे पाषाणी अहल्या, वानर-पशुओं के बीच जाति के गुह निषाद तारण किया उसी प्रकार मेरा भी तारण कीजिए । यहाँ रहीम विनम्रता के साथ कहते हैं, यह तीनो अवगुण मेरे अंदर हैं। जो प्रभु की धाक मानते हैं वे श्रेष्ठ हैं ।

मुनि नारी पाषाण ही, कपि पशु गुह मातंग ।
तीनों तारे रामजु, तीनों मेरे अंग ।। 162 पृ 94
रहिमन करि सम बल नहीं, मानवत प्रभु की धाक ।
दाँत दिखावत दीन है, चलत घिसावत नाक ।। 187 पृ 96

सख्य भक्ति : सख्य भाव की भक्ति में अपने प्रभु से व्यंग्य विनोद, चुहल मजाक सभी विहित हैं । रहीम जैसे शिष्ट विनोदी प्रभु के प्रति व्यंग्य विनोद से क्यों चुकते ?

खेचि चढ़नि ढीली ठरनि, कहहु कोन यह रीति ।
आज कालि मोहन गही, बस दिया की रीति ।। 148 पृ 82

हरि रहीम ऐसी करी, ज्यों कमान सर पूर ।
खेचि आपनी ओर को, डारि दियो पुनि दूर ।। 286 पृ 106

प्रभु, स्मरण करने पर भी हम पर कृपा न करके, स्मरण न करनेवाले अन्यों पर कृपा करते हैं । प्रभु की निष्ठुरता पर व्यंग्य करते हुए रहीम कहते हैं पहले तो अपनी ओर आकर्षित किया और फिर दूर भी कर दिया । नाथ जी ने जब अपने दर्शनों से वंचित किया था तब यह दोहा रहीम ने कहा था । मथुरा जाने के पूर्व श्रीकृष्ण ने गोवर्धन धारण कर गोप-गोपियों की रक्षा की थी । परन्तु मथुरा जाने के बाद गोकुल के जन को भूल गये । रहीम बड़े अधिकारी भावना से पूछते हैं कि ब्रज का ऐसा हाल करना ही था तो पहले उनकी रक्षा ही क्यों की ?

जो रहीम करिबो हुतो, ब्रज को इहै हवाल ।
तो कोह कर पर धरयो, गोवर्धन गोपाल ।।
83 पृ 85

शृंगार भक्ति - शृंगार भक्ति में भक्त भगवान को अपने पति के रुप में देखता है । उसे प्रीतम मानता है । रहीम को जब से नाथ जी के दर्शन हुए तब से उनकी यह छबि उनके नेत्रों में ऐसी बसी कि किसी और वस्तु के लिये वहाँ स्थान नहीं रहा । प्रभु - छबि के अतिरिक्त और वस्तुओं की शोभा फिकी लगने लगी -

मोहन (प्रीतम) छबि नैनन बसी, पर छबि कहाँ समाय ।
भरी सराय *रहीम* लखि, आप पथिक फिर जाय । 129 पृ 90

शृंगार भक्ति में विरह के पद अधिक मिलते हैं । हे कृष्ण *विरह* के कारण मेरे प्राण तड़प रहे हैं, तुझे देखे बिना सुख नहीं मिलता । इसलिए श्रीकृष्ण से तुझे मिला दो ।

मोहन जीवन प्यारे, कसि हित कीन ।
दरसनही को तरफत, ये दृग मीत्र ।। 90 पृ 151

जदपि बसत है सजनी, लाखन लोग ।
गुन न भूलि हो सजनी, तनक मिलाव ।। 16 पृ 146

इसी प्रकार शांत भक्ति का भी एकाध उदाहरण मिल जाता है जैसे --

एके साँध सब साँध सब साँध सब जाय ।
रझिन मूलहिं सीचबो, फुलहि फलहि अधाय ।। 20 पृ 78

वात्सल्य भक्ति - रहीम श्रीकृष्ण को कुछ देना चाहते हैं । परन्तु उनके पास देने के लिए ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो कृष्ण के पास न हो । रहीम कहते हैं आपके पास तो सब है, आपको धन की कोई कमी नहीं कि साक्षात लक्ष्मी आपकी पत्नी है । रत्नाकर याने सागर आपका घर है, आप स्वयं जगदीश्वर हैं, इस संसार के मालिक हैं , भला आपको क्या दिया जाय ?

रत्नाकरस्तव गृहं गृहिणी च पद्मा ।
किं देय मस्ति भवने जगदीश्वराय ।।

पर एक बात है - श्रीकृष्ण मक्खन चुराकर पकड़े जाने के भय से धुप से गरम भूमि की चिन्ता न करते हुए भागे जाते थे । तब रहीम उन्हें बड़े सस्नेह से ममत्व से कहते हैं -

नीत यदि नवनीत नीतं नीतं किमेतेन ।
आतपतापित भूमा मा धाव माधाव मा धाव ।।

नवनीत चुरा लिया तो क्या हुआ ? भले ले लिया, परन्तु हे माधव धुप से तपी भूमि पर तो मत भागो, मत दौड़ो, रहीम कहते हैं कि तुम्हें माँ की डाँट का डर लगता है तो मेरे हदय के गहन अन्धकार में है माखन चोर, छिप जाओ, बड़ी सुरक्षित जगह है, यहाँ कोई तुम्हें पकड़ नहीं पायेगा ।

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com